प्रेरणा
MOTIVATION

प्रेरणा - अर्थ एवं परिभाषा →

व्यक्ति के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन करते समय एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि व्यक्ति अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के व्यवहार क्यों और कैसे करता है? इस प्रश्न का उत्तर प्रेरणाओं के आधार पर ही खोजा जा सकता है। प्रेरणा एक ऐसी आन्तरिक शक्ति है जो व्यक्ति को कोई विशेष व्यवहार अथवा कार्य करने के लिए प्रेरित अथवा उत्तेजित करती है। सच तो यह है कि व्यक्ति का प्रत्येक नैसर्गिक तथा अर्जित व्यवहार किसी-न-किसी प्रेरणा का ही परिणाम होता है। प्रेरणा व्यक्ति की क्रियाओं को संचालित, नियन्त्रित और रूपान्तरित करती है तथा उसे व्यवहार की एक दिशा प्रदान करती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सामाजिक जगत में होने वाले सभी व्यवहार तथा क्रियाएँ प्रेरणाओं से प्रभावित होते हैं।

समाजशास्त्री टालकॉट पार्सन्स ने स्पष्ट किया कि किसी भी सामाजिक क्रिया के तीन आधार प्रमुख होते हैं— कर्ता (Actor), परिस्थिति (situation), प्रेरणा (Motivation)। कर्ता किसी विशेष परिस्थिति में कोई क्रिया तब तक नहीं कर सकता जब तक उसके अन्दर क्रिया को करने की एक प्रेरणा अथवा चालक शक्ति न हो। अर्थात प्रेरणा व्यक्ति को किसी विशेष प्रयास के लिए प्रोत्साहित करके क्रिया को आरम्भ करवाती है तथा उद्देश्य की प्राप्ति होने तक क्रियाओं को एक निश्चित दिशा की ओर प्रेरित करती है।

शाब्दिक रूप से मोटिवेशन शब्द लैटिन भाषा की उसी धातु से सम्बन्धित है जिससे Motion, Move और Motor शब्द बने हैं। इस दृष्टिकोण से मोटिवेशन अथवा प्रेरणा का तात्पर्य गति देना, उत्तेजना देना अथवा कार्य के लिए प्रेरित करना है। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मनोवैज्ञानिक अर्थ में प्रेरणा का तात्पर्य केवल हमारी जीवन रचना में विद्यमान कुछ ऐसे आन्तरिक उत्तेजकों से होता है जिनके प्रभाव से व्यक्ति

कोई व्यवहार करता है। इसके विपरीत, सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत प्रेरणा एक आन्तरिक उत्तेजक होने के साथ ही कोई बाह्य उत्तेजक भी हो सकता है जो नियोजित रूप से व्यक्ति के व्यवहारों को निर्देशित करता हो।

→ क्रेच तथा क्रचफील्ड ने प्रेरणा की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए लिखा — कार्य की दिशा तथा दृढ़ता का अध्ययन करना ही प्रेरणा का अध्ययन है।

स्पष्ट है कि प्रेरणा एक ऐसी शक्ति अथवा कारक है जो व्यक्ति की क्रिया को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है तथा अन्तिम उद्देश्य को प्राप्त करने तक व्यक्ति के अन्दर कार्य करने की एक ऐसी दृढ़ता प्रदान करता है जिससे व्यक्ति अपने कार्य को बीच में ही न छोड़ दे।

→ जे. पी. गिलफोर्ड → प्रेरणा एक ऐसा आन्तरिक कारक अथवा दशा है जो किसी क्रिया को आरम्भ करने तथा उसे जारी रखने की प्रवृति उत्पन्न करती है।

इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य की प्रत्येक क्रिया का संचालन प्रेरणा द्वारा ही होता है। आन्तरिक कारक के रूप में प्रेरणा व्यक्ति को कुछ क्रियाएँ आरम्भ करने में तथा उनके लिए सदैव प्रयत्नशील रहने को प्रेरित करती है।

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि प्रेरणा के तीन कार्य मुख्य हैं — किसी क्रिया को आरम्भ करना, क्रिया को एक लक्ष्य की ओर निर्देशित करना तथा लक्ष्य-प्राप्ति तक उस क्रिया को जारी रखना।

→ हिलगार्ड → ने प्रेरणा का विश्लेषण करने के लिए इससे सम्बन्धित तीन तत्वों का विवेचन किया है। इन्हे हम आवश्यकता, चालक तथा उद्दीपन कहते है। इन्ही तत्वों के सहयोग से प्रेरकों का निर्माण होता है। इसलिए प्रेरणा के अर्थ को स्पष्ट करते समय अक्सर इन तीनो तत्वों का उपयोग किया जाता है।

29

Friday • WK 26 (180-185)

किसी आवश्यकता से एक विशेष चालक का जन्म होता है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति अपने अन्दर कोई मानसिक अथवा शारीरिक तनाव महसूस करता है। यह तनाव तभी दूर होता है जब किसी उद्दीपन के द्वारा इस आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है। आवश्यकता और चालक व्यक्ति की आन्तरिक अवस्था का बोध कराते हैं जबकि उद्दीपन बाह्य पर्यावरण में विद्यमान होता है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि केवल उद्दीपन ही व्यक्ति को क्रियाशील नहीं बनाता बल्कि इसके लिए किसी चालक का होना आवश्यक होता है।